Toppersnotes®
Unleash the topper in you

JHARKHAND

CGL

Jharkhand General Graduate Level Combined Competitive Examination

भाग – 1

झारखंड का सामान्य अध्ययन, कंप्यूटर एवं विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

JHARKHAND CGL

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	झारखण्ड का भूगोल एवं पर्यावरण	1
2.	झारखण्ड की सिंचाई प्रणाली	11
3.	झारखण्ड के वन प्रदेश	13
4.	झारखण्ड के पर्व त्यौहार, मेले	19
5.	झारखण्ड राज्य की पर्यटन नीति – 2015	28
6.	झारखण्ड की कला एवं संस्कृति, जनजातियाँ	32
7.	झारखण्ड के प्रमुख किले/राज प्रसाद	55
8.	झारखण्ड का इतिहास	57
9.	झारखंड में धार्मिक आंदोलन	59
10.	प्राचीन काल में झारखण्ड	61
11.	मध्य काल में झारखंड	64
12.	उत्तर मध्यकाल	65
13.	झारखण्ड के क्षेत्रीय राजवंश	70
14.	झारखंड में अंग्रेजों का प्रवेश	75
15.	झारखण्ड मे जनजातीय विद्रोह	78
16.	झारखण्ड में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	88
17.	1935–39 के बीच झारखण्ड में प्रमुख गतिविधियाँ	96
18.	झारखण्ड में ईसाईयों का प्रवेश	98
19.	झारखण्ड राज्य निर्माण आंदोलन	99
20.	झारखण्ड मे विभिन्न शासन व्यवस्थाएँ	103
21.	झारखण्ड की अर्थव्यवस्था एवं जनसंख्या	114
22.	झारखण्ड में भूमि सुधार से संबंधित कानून	118
23.	झारखण्ड की प्रमुख नीतियाँ	128
24.	प्रमुख योजनाएँ व कार्यक्रम	142
25.	कम्प्यूटर वन लाइनर	161
26.	दैनिक विज्ञान : महत्वपूर्ण तथ्य	183

झारखण्ड का भूगोल

झारखण्ड का भूगोल एवं पर्यावरण

झारखण्ड का भौगोलिक परिचय

- झारखण्ड राज्य का भौगोलिक विस्तार 21°58'1 से 25°19'15 उत्तरी अक्षांश तथा 83°19'50 से 87°57 पूर्वी देशांतर के मध्य है।
- यह राज्य विश्व के मानचित्र पर उत्तरी गोलार्द्ध में अवस्थित है।
- इस राज्य का निर्माण एकीकृत बिहार के 46% भूभाग को अलग करके किया गया था।
- देश के पूर्वी भाग में स्थित झारखण्ड भारत का 28वां राज्य है।
- राज्य में क्षेत्रफल की दृष्टि से बडे तथा छोटे जिले हैं।
- खूँटी तथा लोहरदगा ही ऐसे जिले हैं जो किसी अन्य राज्य की सीमा को स्पर्श नहीं करते हैं।

झारखण्ड की भूगर्भिक संरचना

1. आर्कियनकालीन चट्टानें

- झारखण्ड की चट्टानी संरचनाओं में यह सर्वप्रथम है जिसका विस्तार झारखण्ड के 90% भू-भाग पर है।
- इन चट्टानों में आग्नेय, अवसादी तथा रूपान्तरित तीनों प्रकार की चट्टाने मौजूद हैं तथा छोटानागपुर पठार की, आग्नेय, अवसादी तथा रूपांतरित चट्टानों का संबंध इसी काल की चट्टानों से है।
- इन चट्टानों को आर्कियन क्रम व धारवाड क्रम की चट्टानों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

आर्कियन क्रम

- ये गर्म व तरल लावा के जमाव से निर्मित ग्रेनाइट चट्टान है, जो जीवाश्म रहित है।
- इनमें रूपान्तरण के पश्चात् ये चट्टानें नीस व सिस्ट में परिवर्तित हो गई हैं।

धारवाड क्रम

- इन चट्टानों का विकास आर्कियन क्रम की चट्टानों के अपरदन व निक्षेपण के परिणामस्वरूप हुआ है।
- ये चट्टाने भी जीवाश्म रहित हैं।
- इन चट्टानों में लौह-अयस्क की प्रचुर उपलब्धता के कारण इन्हे लौह-अयस्क की श्रृंखला कहा जाता है।

2. विन्ध्यन क्रम की चट्टानें

- अवसादों में जमाव से निर्मित ये चट्टाने बलुआ पत्थर एवं चूना पत्थर से युक्त क्षैतिज परतदार चट्टाने है।
- पारसनाथ पहाडी का उत्थान भी इसी काल में हुआ है।

गोंडवाना क्रम की चट्टानें

- इन चट्टानों का निर्माण दामोदर घाटी के तलछट से हुआ है ।
- आर्थिक दृष्टिकोण से ये चट्टाने अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

सिनोजोइक क्रम

- इस काल में हिमालय के उत्थान के दौरान इसका प्रभाव छोटानागपुर पठारी क्षेत्र पर भी पडा ।
- हिमालय के उत्थान व उसके प्रभाव को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है । जिसका विवरण निम्नवत है ।

पहला उत्थान

- हिमालय के प्रथम उत्थान का संबंध मायोसीन काल से है ।
- इस दौरान भी छोटानागपुर पठारी क्षेत्र में भूगर्भिक हलचल हुयी ।

दूसरा उत्थान

- इस उत्थान का संबंध अन्तिम प्लायोसीन काल से है ।
- इस दौरान भी छोटानागपुर पठारी क्षेत्र में भूगर्भिक हलचल हुयी ।

तीसरा उत्थान

- इस उत्थान का संबंध प्लीस्टोसीन काल से है ।
- इन अपरदनों के पश्चात् इस क्षेत्र की वर्तमान ऊँचाई इस प्रकार हैः-
  पाट क्षेत्र - 900 से 1100 मीटर
  राँची पठारी - 600 मीटर से कम
  निम्न छोटानागपुर का पठार - 300 मीटर से अधिक

➢ राजमहल ट्रैप तथा दक्कन लावा की चट्टाने

- इसकी ऊँचाई 900 से 1100 मीटर तक है।

➢ नवीनतम जलोढ निक्षेपः-

- नदियों के अपरदन व जलोढी के निक्षेपण के परिणामस्वरूप इसका निर्माण हुआ है, जो वर्तमान में भी जारी है।
- इनके द्वारा मैदानी क्षेत्र में निक्षेपण के परिणाम स्वरूप कई स्थानों पर ग्रेनाइट के उच्च भू-भाग का निर्माण हो गया है। जिसे मोनेडानॉक कहते है।

अन्य तथ्य

- राज्य की अधिकांश चट्टानों का विस्तार पूर्व-पश्चिम दिशा में है।
- झारखण्ड में धारावाड क्रम की चट्टानों का विकास कोल्हान पहाडी क्षेत्र में हुआ । इन चट्टानों को लौह अयस्क की श्रृंखला भी कहा जाता है।

झारखण्ड का धरातलीय स्वरूप

- झारखण्ड के धरातलीय स्वरूप के निर्माण में छोटानागपुर पठारी क्षेत्र का सर्वप्रथम योगदान है। यह पठार भारत के प्रायद्वीपीय पठार का उत्तर-पूर्वी भाग है। इसका विस्तार उडीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार तथा छत्तीसगढ राज्य की सीमाओं तक है।
- छोटानागपुर पठार की औसत ऊँचाई 760 मी. है तथा इसकी सबसे ऊँची चोटी सम्मेद शिखर (पारसनाथ पहाडी) है। जिसकी ऊँचाई 1,365 मी. (4478 फीट) है। यह झारखण्ड की भी सबसे ऊँची चोटी है।

झारखण्ड के धरातलीय स्वरूप का विभाजन

1. पाट क्षेत्र (पश्चिमी पठार)

- पाठ का अर्थ समतल जमीन होता है। पारसनाथ के अतिरिक्त यह झारखण्ड का सबसे ऊँचा भाग है।
- इस क्षेत्र का ऊपरी भाग टांड तथा नीचला भाग दोन कहलाता है।
- झारखण्ड के तीन सबसे ऊँचे पाट नेतरहाट पाट, गणेशपुर पाट तथा जनीरा पाट है।
- तश्तरीनुमा बारवे का मैदान झारखण्ड के पाट क्षेत्र का हिस्सा है।

2. राँची का पठार

- राँची का पठार झारखण्ड का सबसे बडा पठारी भाग है।
- यह समुद्रतल से औसतन 600 मीटर की ऊँचाई वाला क्षेत्र है।

3. हजारी बाग का पठार

(अ) ऊपरी हजारीबाग का पठार

- इसका विस्तार राँची पठार के समानान्तर हजारीबाग जिले में है।
- इस पठार की समुद्रतल से औसत ऊँचाई 600 मीटर है।

(अ) निचला हजारीबाग का पठार

- छोटानागपुर के बाहरी हिस्से में अवस्थित होने के कारण इसे बाह्य पठार भी कहा जाता है।
- यह क्षेत्र समुद्रतल से 450 मी. ऊँचा है। यह झारखण्ड में सबसे कम ऊँचाई वाला पठार है।
- यह अत्यंत कठोर पाइरोक्सी ग्रेनाइट से निर्मित है।

4. राजमहल की पहाडियाँ एवं मैदानी क्षेत्र

- यह असमान नदी घाटियों एवं मैदानी क्षेत्रों से मिलकर निर्मित हुआ है।
- यह पठारी क्षेत्र समुद्रतल से औसतन 150-300 मीटर ऊँचा है।
- इस क्षेत्र में स्थित राजमहल की पहाडी बिहार के कैमूर पहाडी क्षेत्र तक विस्तृत है।
- इसके दक्षिण में अजय नदी घाटी मौजूद है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

झारखण्ड में अपवाह प्रणाली

- वर्षा के जल एवं अन्य जल के बहाव की समग्र व्यवस्था अपवाह प्रणाली के नाम से जानी जाती है।
- जल संसाधन विभाग, झारखण्ड सरकार के अनुसार राज्य का 1.59 लाख हेक्टेयर क्षेत्र जलीय स्त्रोतों द्वारा आच्छादित है, जो राज्य के कुल भूभाग का लगभग 2% है।

झारखण्ड में नदियाँ

- सोन नदी के अतिरिक्त झारखण्ड की सभी नदियाँ बरसाती है, जो जल के लिए मानसून पर निर्भर है। ये गरमी के महीने में सूख जाती है।
- झारखण्ड की नदियों को प्रवाह की दिशा के अनुसार उत्तरवर्ती एंव पूरबवर्ती/दक्षिणवर्ती नदियों में विभाजित किया जा सकता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

झारखण्ड में खनिज संसाधन

- धात्विक खनिज
  - लौह धात्विक
  - अलौह धात्विक खनिज
- अधात्विक खनिज
- ऊर्जा खनिज

- झारखण्ड खनिज संसाधन की दृष्टि से भारत का अग्रणी राज्य है।
- झारखण्ड को भारत का 'रुर' कहा जाता है।
- देश के कुल खनिज का लगभग 40% खनिज झारखण्ड राज्य में पाया जाता है।
- विभिन्न खनिजों के भंडार की दृष्टि से झारखण्ड का देश में स्थान इस प्रकार है –

  पहला स्थान – कोयला (कोयला उत्पादन की दृष्टि से तीसरा स्थान) प्राइम कोकिंग कोल मध्यम कोकिंग कोल पन्ना, रॉक फॉस्फेट

  तीसरा स्थान – ग्रेनाइट, बेंटोनाइट, गैर-कोकिंग

  चौथा स्थान – फायरक्ले, एस्बेस्टॉस, कार्टानाइट, बॉक्साइट, क्रोमाइट, ग्रेफाइट (ग्रेफाइट उत्पादन की दृष्टि से प्रथम स्थान)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पांचवा स्थान – वार्मीकुलाइट
छठा स्थान – चाइनाक्ले, अभ्रक, क्वार्ट्ज
सातवां स्थान – फेल्सपार, क्वार्ट्जाइट, गारनेट

- वित्तीय वर्ष 2017 – 18 में राज्य में कुल 2070.39 करोड रुपये मूल्य के खनिज संसाधनों का उत्पादन किया गया है।
  इंडियन मिनरल बुक के अनुसार चकमक पत्थर का एकमात्र उत्पादक राज्य झारखण्ड है।

झारखण्ड में धात्विक खनिज

(A) लौह धात्विक खनिज

1. लौह अयस्क
   - सिंहभूम क्षेत्र, लौह अयस्क की प्राप्ति का प्रमुख केन्द्र है जिसका विस्तार उडीसा के मयूरभूज एवं क्योंझोर तक है।
   - यह विश्व का सर्वाधिक लौह भंडार वाला क्षेत्र है।
   - देश के कुल लौह अयस्क भंडार का लगभग 26 प्रतिशत झारखण्ड राज्य में निक्षेपित है।
   - झारखण्ड में उपलब्ध कुल अयस्क का 99 प्रतिशत हेमेटाइट वर्ग का लौह अयस्क है।
   - राज्य में मैग्नेटाइट लौह अयस्क भंडार के पूर्वी सिंहभूम पलामू, हजारीबाग तथा लातेहार जिले में है।

2. क्रोमाइट
   - झारखण्ड में क्रोमाइट का संकेन्द्रण मुख्यतः सिंहभूम क्षेत्र है।
   - राज्य में लगभग 7,36,000 टन क्रोमाइट का भण्डार मौजूद है।

3. मैंगनीज
   - झारखण्ड में मैंगनीज अयस्क का संकेन्द्रण मुख्यतः सिंहभूम क्षेत्र में है।
   - राज्य में लगभग 13.7 मिलियन टन मैंगनीज का भंडार उपलब्ध है।
   - यह धारवाड चट्टानों से प्राप्त होता है।

4. जस्ता
   - यह संथाल परगना, हजारीबाग, पलामू, रांची एवं सिंहभूम जिले में पाया जाता है।

5. टिन
   - यह आग्नेय चट्टानों में उपलब्ध कैसिटाइट नामक कच्चे धातु से प्राप्त होता है।
   - झारखण्ड के हजारीबाग रांची, सिंहभूम, संथाल परगना तथा पलामू में यह पाया जाता है

6. सोना

- राज्य के सिंहभूम क्षेत्र की चट्टानों में सोना अलग मात्रा में पाया जाता है ।
- झारखण्ड में इसका उत्पादन मुख्यतः हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा किया जाता है ।
- इंडियन मिनरल इयरबुक (2018-19) के अनुसार कर्नाटक के बाद देश में सोने का सर्वाधिक उत्पादन झारखण्ड राज्य में होता है ।

(B) अलौह धात्विक खनिज

1. तांबा

- तांबा के उत्पादन की दृष्टि से झारखण्ड भारत का अग्रणी राज्य है ।
- देश के कुल तांबा भंडार का 18.5 प्रतिशत झारखण्ड राज्य में निक्षेपित है ।
- तांबा का उपयोग बिजली के उपकरणों धातु मिश्रण आदि में किया जाता है ।

2. बॉक्साइट

- झारखण्ड में उच्च कोटि का बॉक्साइट पाया जाता है । जिसमें 52 प्रतिशत से 55 प्रतिशत तक एल्यूमिनियम होता है ।
- झारखण्ड के मुरी नामक स्थान पर बॉक्साइट को गलाने का संयंत्र है ।

3. टंगस्टन

- इसका उपयोग बिजली के उपकरण बनाने तथा लौह धातु के निर्माण में किया जाता है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

झारखण्ड में अधात्विक खनिज

1. अभ्रक

- झारखण्ड राज्य में प्रचुर मात्रा में अभ्रक की उपलब्धता है ।
- कोडरमा को 'भारत की अभ्रक राजधानी कहा जाता है ।

2. कायनाइट

- झारखण्ड में कायनाइट का सबसे बडा भण्डार पूर्वी सिंहभूम के लिप्साबुरू क्षेत्र में है । इसके अतिरिक्त पश्चिमी, सिंहभूम व सरायकेला-खरसावां जिलें में भी इसके भंडार है ।

3. ग्रेफाइट

- यह पलामू में सर्वाधिक पाया जाता है । इसके अतिरिक्त लातेहार व गढ़वा में भी ग्रेफाइट पाया जाता है ।
- यह कार्बन का एक रूप है, जिसे काला सीसा भी कहा जाता है ।

4. चूना पत्थर

- यह हजारीबाग, रांची, पलामू, बोकारो, धनबाद, गढ़वा, गिरिडीह, गोड्डा, लातेहार, पूर्वी सिंहभूम व पश्चिमी सिंहभूम में पाया जाता है ।

5. डोलोमाइट

- पलामू जिला के डाल्टनगंज (मेदिनीनगर) व गढ़वा में डोलोमाइट पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है ।

6. एस्बेस्टस

- यह एक रेशेदार खनिज है जो धारवाड क्रम की चट्टानों में पाया जाता है ।
- यह छत बनाने के काम में प्रयुक्त होता है ।

7. बैंटोनाइट

- यह एक एलुमिनियम सिलिकेट मिट्टी है जिसका ज्वालामुखी में राख से होता है ।
- इसे आम भाषा में मुल्तानी मिट्टी भी कहा जाता है ।

8. सोपस्टोन क्वार्ट्ज

- यह झारखण्ड के सम्पूर्ण छोटानागपुर क्षेत्र के साथ-साथ कुछ अन्य जिलों में भी उपलब्ध है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

झारखण्ड में ऊर्जा खनिज

कोयला

- झारखण्ड भारत में सर्वाधिक कोयला उत्पादक राज्य है ।
- ऊर्जा सांख्यिकी 2020 के अनुसार देश का लगभग 25.88 कोयला (31 मार्च 2019) की स्थिति के अनुसार झारखण्ड राज्य में पाया जाता है ।
- इंडियन मिनरल इयरबुक (2018-19) के अनुसार झारखण्ड राज्य में देश के कुल कोयला उत्पादन का 18.25 प्रतिशत उत्पादित किया गया है ।
- राज्य के कुल कोयला उत्पादन का लगभग 95 प्रतिशत दामोदर घाटी कोयला क्षेत्र में होता है ।
- झरिया क्षेत्र भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अन्तर्गत आता है ।
- झरिया पूरे झारखण्ड के कोयला उत्पादन का 60 प्रतिशत कोयला उत्पादन करता है ।
- झारखण्ड में कोयले के तीन प्रकार (कोकिंग अर्द्ध कोंकिग तथा गैर-कोंकिग) पाया जाता है ।
- झरिया परियोजना
- राजमहल परियोजना

प्राइम कोकिंग कोल

- झारखण्ड राज्य देश में प्राइम कोकिंग कोल का एकमात्र उत्पादक है ।
- झारखण्ड में प्राइम कोकिंग कोल का भंडार लगभग 5313 मिलियन टन है, जो देश के कुल कोकिंग कोल का लगभग 100% है ।

यूरेनियम

- यह एक आण्विक खनिज है ।
- भारत में यूरेनियम का सर्वाधिक उत्पादन (लगभग -शत-प्रतिशत) झारखण्ड राज्य में ही किया जाता है ।

थोरियम

- यह एक आण्विक खनिज है ।
- झारखण्ड के रांची पठार और धनबाद में इसका उसका विस्तार है ।

इल्मेनाइट

- यह एक आण्विक खनिज है ।
- यह रांची में पाया जाता है ।
- देश के कुल इल्मेनाइट का 0.12 प्रतिशत झारखण्ड राज्य में उपलब्ध है ।

बोरिलियम

- यह बेरिल नामक खनिज प्रस्तर से प्राप्त होता है ।
- झारखण्ड के कोडरमा तथा गिरिडीह जिले में बोरिलियम पाया जाता है ।

जिरकन

- इसकी प्राप्ति झारखण्ड में रांची तथा हजारीबाग जिले से होती है ।

झारखण्ड राज्य खनिज विकास निगम लिमिटेड

- राज्य सरकार द्वारा खनिज संसाधनों के विकास एवं उनके समुचित उपयोग के उद्देश्य से झारखण्ड राज्य खनिज विकास निगम लिमिटेड गठन किया गया है ।
- झारखण्ड राज्य खनिज विकास निगम द्वारा राज्य के विभिन्न स्थानों पर कई परियोजना की स्थापना की गयी है । जिसका विवरण है –

झारखण्ड की कृषि

- झारखण्ड की कुल भूमि के मात्र 23% भाग पर कृषि कार्य किया जाता है ।
- बजट 2019-20 के अनुसार राज्य की कुल जनसंख्या का 75% कृषि क्षेत्र में कार्यरत है ।
- वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार झारखण्ड में 38 हेक्टेयर भूमि पर कृषि कार्य संभव है । जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 47.69% है ।
- झारखण्ड में मुख्यतः तीन फसलों, धान, गेहूँ तथा मक्का की खेती की जाती है । धान झारखण्ड की सर्वप्रमुख फसल है मक्का यहां की दूसरी प्रमुख फसल है ।
- राज्य में सिंचाई का सर्वप्रमुख स्रोत कुआँ है ।
- राज्य में लगभग 14.79% परती भूमि पायी जाती है ।

खरीफ फसल

- मानसून के आगमन के समय अर्थात जून- जुलाई में इन फसलों की बुआई की जाती है तथा मानसून की समाप्ति पर अर्थात सितम्बर - अक्टम्बर में इनकी कटाई की जाती है ।
- प्रमुख खरीफ फसल धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, मूंग आदि है ।
- झारखण्ड आर्थिक सर्वेक्षण 2019-20 के अनुसार राज्य में वर्ष 2018-19 में 2017-18 की तुलना फसल में खरीफ के उत्पादन में कमी दर्ज की गयी है ।

रबी फसल

- रबी फसल को ठंडे मौसम की फसल या वैशाखी फसल भी कहा जाता है ।
- रबी फसल अक्टूम्बर- नवम्बर में बोयी जाती है । तथा मार्च में काट ली जाती है ।
- गेहूँ जौ, चना, तिलहन आदि प्रमुख रबी फसलें है ।

झारखण्ड की प्रमुख फसलें

फसल का नाम - धान/चावल
प्रमुख उत्पादन क्षेत्र - सिंहभूम, राँची, गुमला, दुमका
महत्वपूर्ण बातें - यह झारखण्ड में सर्वाधिक उत्पादित की जाने वाली फसल है तथा राज्य की सर्व प्रमुख खाद्य फसल है ।

झारखण्ड में खाद्य सुरक्षा

- झारखण्ड आर्थिक समीक्षा 2019-20 के अनुसार राज्य में वर्तमान समय में कुल 375 गोदाम कार्यरत हैं, जिनकी कुल भंडारण क्षमता 1.61 लाख मीट्रिक टन है।
- राज्य में सर्वाधिक गोदाम गढ्वा (30) गिरिडीट (28) तथा पलामू (27) में है ।
- राज्य में सर्वाधिक पीडीएस डीलर राँची जिले में है ।

झारखण्ड की सिंचाई प्रणाली

- झारखण्ड राज्य में कुल सिंचित भूमि का 12.77% भाग है ।
- राज्य की कुल सिंचित भूमि को 58.32% भाग जल के द्वारा जबकि 41.07% भाग भूमिगत जल के द्वारा सिंचित है ।
- राज्य में कुल सिंचित भूमि का 58% भाग सतही जल द्वारा और 42% भाग भूमिगत जल द्वारा सिंचित होता है ।
- सिंचाई की सर्वाधिक आवश्यकता वाले जिले - गोड्डा, साहेबगज, दुमका, गुमला
- सिंचाई की उच्च आवश्यता वाले जिले - देवघर, रांची, लोहरदगा एवं पश्चिमी सिंहभूम
- सिंचाई की मध्यम आवश्यता वाले जिले - गढवा, पलामू, हजारीबाग, गिरिडीह
- सिंचाई की निम्न आवश्यता वाले जिले - चतरा, बोकारो, धनबाद, एवं पूर्वी सिंहभूम

झारखण्ड में सिंचाई परियोजनाएं

वृहद् सिंचाई परियोजना

- 10,000 हेक्टेयर क्षेत्र से अधिक सिंचाई व्यवस्था वाले परियोजना को वृहद् सिंचाई परियोजना कहते हैं ।
- झारखण्ड राज्य में संचालित प्रमुख वृहद् सिंचाई परियोजनाएं ।

मध्यम सिंचाई परियोजना

- 2000 से 10,000 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की परियोजना को मध्यम सिंचाई परियोजना कहते हैं ।
- राज्य में 600 से अधिक मध्यम सिंचाई परियोजनाएं चल रही हैं ।

लघु सिंचाई परियोजना

- 2000 हेक्टेयर क्षेत्र से कम में सिंचाई की व्यवस्था वाली परियोजना को लघु सिंचाई परियोजना कहते हैं ।
- राज्य सरकार द्वारा पहाडी क्षेत्र उद्वह सिंचाई निगम लिमिटेड के मध्यम से विभिन्न लघु सिंचाई परियोजना चलाई जा रही हैं ।

बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजना

- वैसी परियोजनाएं जो एक से अधिक उद्देश्यो की पूर्ति के लिए निर्मित की जाती है उन्हें बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजना कहा जाता है ।
- परियोजनाओं के अंतर्गत नदियों पर बांध बनाकर सिंचाई के साथ-साथ बाढ नियंत्रण जल विद्युत उत्पादन मत्स्यन आदि कार्य संपन्न किया जाता है ।

झारखण्ड में बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ

दामोदर नदी घाटी परियोजना

- यह भारत की पहली बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजना जिसे 1948 ई. में प्रारंभ किया गया ।
- यह झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल की संयुक्त परियोजना है ।
- इस परियोजना के संचालन हेतु 7 जुलाई, 1948 ई. को दामोदर घाटी निगम की स्थापना की गई थी, जिसका मुख्यालय कोलकाता में है ।
- इस परियोजना के 8 बडे बाँध हैं –
  तिलैया, मैथन, बाल पहाडी, पोत, अय्यर, बेमो, बोकारी एवं कोनार
- इस परियोजना से 8 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की जाती है ।

स्वर्णरेखा नदी परियोजना

- 1982–83 ई. में प्रारंभ यह झारखण्ड, पाश्चम बंगाल तथा उडीसा की संयुक्त परियोजना है ।
- यह परियोजना विश्व बैंक के सहयोग से चलायी जा रही है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you